रोजगार से रोटी, कपड़ा और मकान

A B C D से शुरू करते हैं यह गाथा यहां पर इसका मतलब इंगलिश में ही बताना होगा : Assets Based Community Development. हिन्दी में एक कहावत है, "तेते पैर पसारिये जेती लम्बी सौढ़" यानि आपको जो सम्पदा उपलब्ध है उसके आधार पर विकास। आज हमारे समाज में व्यक्ति की हर मांग अभाव से पैदा हुई लगती है इसलिये हमारी सारी शक्ति व समय हमारी कमियों को पूरा करने में लगा हुआ है और हमें आगे अपने को बढ़ाना है इस तरफ हमारा ध्यान ही नहीं जाता है।

हमारे देश की सरकार हमारी ही मांगों को पूरा करने के लिए जब उपलब्ध साधनों से ज्यादा व्यय करने का रास्ता चुनती है तो उसका आकार सुरसा के मुंह की तरह बढ़ता जाता है। वह समस्याओं के खर्चीले समाधान तथा अपने कर्मचारियों के वेतन को पैसा मांग कर पूरा करती है। जो खुद मांग कर खाएगा वह औरों को क्या सिखाएगा। मांगने के अलावा हर ओर परिणामस्वरूप मांगों का बोलबाला है। अपना देश भारत प्राकृतिक सम्पदाओं की प्रचुरता व अत्यंत अनुकूल जलवायु का मालिक होते हुए भी कमियों का देश है। ऐसा किसलिए? क्या यहां कर्मठता की कमी है? हमने बहुत से लोगों को जी तोड़ मेहनत करते देखा है और बहुत से लोगों को यहां काम से जी चुराते भी देखा है। यह कोई नयी बात नहीं, हर जगह ऐसा होता है, यह तर्क दिया जा सकता है। फिर बात सिस्टम पर आती है। क्या हमारे समाज की पद्धति एवं शासन पद्धति में दोष है? क्योंकि कर्मठता, आत्मविश्वास व अभिलाषाओं की कभी मनुष्य में उसके व्यक्तित्व को बढ़ावा-प्रोत्साहन न मिलने से भी हो सकती है।

यदि हम सब काम अपने आप से करने लगेंगे तो सरकार पर निर्भरता कम होगी यह सरकार नहीं चाहती है इसलिये उसका उसूल है "नियम बना दो, रोड़ा अटका दो।" अगर किसी समाज को निकम्मा बनाना हो तो सरकार को ऐसा बनाओ जैसा भारत में हो रहा है। जब व्यक्ति के सामने के सारे रास्ते बंद होंगे तो रिश्वत को बढ़ावा मिलेगा। भारत सरकार में एक मंत्रालय है "मानव उत्थान" का पर क्या वह वो सब कर पा रहा है जो उसे करना चाहिए? "सम्भावनाएं पैदा करना।" जबकि हमारे पास ऐसे साधन है और उन पर विचार होता है पर कहीं हम असफल न हो जाएं इसलिये लकीरों पर ही चलते-चलते लकीरों के फकीर हो रहे हैं।

भारत के योग्य बच्चे बाहर जाकर नयी-नयी खोजें करके विश्व में नये प्रतिमान स्थापित कर रहे हैं। एक भारतीय जो IBM में काम करते हैं, एक साल में ६० नयी चीजों को बना पाए हैं सन् २००३ में जो IBM के अंदर एक रिकार्ड है और IBM दुनिया की सबसे ज्यादा नयी चीजें बना पाया है। तो यह बात नहीं है कि हमारे अंदर प्रतिभा नहीं है। हमारे प्रयासों को प्रोत्साहनों की कमी है अपने देश में। ज्यादा से ज्यादा इंग्लैण्ड की नकल कर लो तो समाज में आदर मिल जाएगा परन्तु अपनी योग्यता से कुछ मूलभूत परिवर्तन लाकर समाज के फायदे के लिये कुछ करना चाहो तो कोई नहीं सुनता या प्रोत्साहन देता। मदद करना तो दूर की बात है उलटे लोग विपरीत परिणाम दिखाकर हतोत्साह करेंगे। ऐसे में क्या सुधार व सामाजिक उन्नति की आशा की जा सकती

है? जो भी नये तरीके या नियम लागू किये जाते हैं वो ऊपर से थोपे हुए लगते हैं। व्यवहार में उनका कोई औचित्य या लाभ नहीं होता। परिणाम होता है, नियमों का उल्लंघन और लोगों की शासन के प्रति अवहेलना। कोई भी अवधारणा ऐसी नहीं होती जो लोगों द्वारा तैयार की गई हो और सरकार उसे समर्थन दे रही हो ताकि सभी वर्गो के लोगों में आत्मविश्वास पैदा हो कि अब हम भी अपने देश में अपने सपनों को पूरा करने में समर्थ हैं। क्या यह प्रजातंत्र है? हां गंदगी फैलाने की व गुंडागर्दी की पूरी स्वतंत्रता है और लोग अपने राष्ट्रीय अधिकार का इस गर्व से इस्तेमाल करते हैं।

जब हम कमियों की सूची बनाते हैं तो वह इतनी लम्बी और भारी हो जाती है कि हमें अपनी शक्तियां बहुत क्षीण लगने लगती हैं। हम स्वयं को बौना महसूस करने लगते हैं। यदि हम अपनी शक्ति को अपने भरोसे व पौरूष पर निर्भर करें और समय पर चलने का व्रत लें तो समस्याओं का निदान एक-एक करके हो जाएगा, यही इस लेख को लिखने का मेरा मन्तव्य है।

परिश्रम से - रोजगार से - रोटी, कपड़ा और मकान बनाना न कि मांगना जैसा अब तक चला आ रहा है- नारा : "रोटी, कपड़ा और मकान अपनी सरकार देगी वादा रहा।" जो पिछले ५७ सालों से विभिन्न सरकारों को उलट-पलट कर आजमा चुके। यह पता नहीं कि सरकार अपनी है पर पद्धति तो वही पुरानी है - स्वतंत्रता से पहले ब्रिटिश सरकार वाली। इसलिये योजनाएं तो बनी पर संभावनाएं न बढ़ी, परस्पर विश्वास जनता व सरकार में नहीं बन पाया अतः समस्याओं का सार्वजनिक व स्थायी हल नहीं निकला।

अपेक्षा करें कि हम रोजगार द्वारा ही स्वतः अपनी रोटी का फिर कपड़ों का बाद में मकान का भी स्वयं निर्माण करेंगे तो ही काम चलेगा आगे वरना हम जीवन पर्यन्त दूसरों पर आश्रित रहेंगे। यह एक अच्छी अनुभूति नहीं है और आगे विकास को रोकती हैं।

दूसरा पहलू यह भी है कि यदि दूसरे लोग तुम्हारी मदद करेंगे तो वे अपनी इच्छा, परिस्थिति व समय के अनुसार करेंगे। अगर स्वयं करोगे तो तुम स्वतंत्र होगे कि क्या करना है, कैसे करना है और कब करना है। इन प्रश्नों के जवाब यदि आपको मिल गये हैं तो आप खुद अपने को समर्थ पाएंगे और आपका आत्मविश्वास कहेगा कि आप कुछ भी कर सकते हैं वरना आश्रित होंगे और अपने जीवन में और बातों की भी कल्पना नहीं कर पाएंगे। जबकि आपके विकास की सम्भावनाएं अनन्त है पर आपने स्वयं अपने को सीमित रखा हुआ है किसी की मदद पर आश्रित होकर।

परस्पर लाभ का एक दृष्टिकोण है गांवों और शहरों के बीच जो स्वार्थपूर्ण संबंध से शुरू होता है पर उससे शहरों को भी लाभ होगा और गांवों को भी। यह कैसे संभव है? अपने आस-पास के गांव देखे जो सफल कहलाए जा सकते हैं किसी एक क्षेत्र में ही सही उनकी अच्छाई को अपनाएं। यह एक शुरूआत है। अब गांवों की आधारभूत अच्छाइयों को लें। यहां रहना आसान, सुरक्षापूर्ण, स्वस्थ्य व कम खर्चीला होता है। जलवायु ज्यादा स्वच्छ है। कमी हो सकती है तो पानी की। अधिकांश गांवों में बिजली उपलब्ध है कितने घंटे आती है यह मात्रा कम ज्यादा हो सकती है। हर गांव सड़कों द्वारा शहरों से जुड़ा है। ज्यादातर गांवों में फोन की भी सुविधा है वायरलैस व लैंडलाइन दोनों की। यह सब पिछले कुछ सालों में सरकार व गैर सरकारी संस्थाओं एवं व्यक्तिगत प्रयत्नों

से संभव हो सका है। अधिकांश गांवों में कुछ पढ़े-लिखे युवक युवतियां भी हैं। पंचायत हर गांव में है उसका खर्चा प्रान्तीय सरकारें उठाती हैं। टेलिविजन हर गांव में हैं जहां प्रान्तीय भाषाओं में जन-उपयोगी प्रसारण होता है।

कृषि विषयों पर, पढ़ाई के विषयों पर जानकारी दी जाती है। जन-साधारण के स्वास्थ विषयों पर तथा विदेशों में हो रही विभिन्न खोजों व योजनाओं के बारे में भी बताया जाता है। अब हर गांव में कोई न कोई NGO गैर सरकारी संस्था भी काम कर रही हैं। यहां पर यह उल्लेख करना असंगत न होगा कि जो युवक और युवतियां गांवों से शहर पढ़ने जाते हैं और वहीं की जीवन में रम जाते हैं क्योंकि शायद वे उस शहरी शिक्षा का उपयोग गांवों में नहीं देख पाते हैं पर उनमें से बहुतों का शहरी जीवन निराशामय व गांवों के जीवन से बदतर ही बीतता है। जो शिक्षा भी प्राप्त नहीं कर पाते और शहरों में मजदूरी करके जीविका चलाने को बाध्य होते हैं वे शहर के नितांत घिनौने हिस्से में जीवनयापन के लिये मजबूर हो जाते हैं यह गांवों की एक विशेषता हुई कि रहन-सहन आबोहवा की दृष्टि से समान स्तर का होता है। इनके गांवों को छोड़कर चले जाने से गांव वीरान और अधिक अभावग्रस्त हो जाते हैं। शहरों में इसके विपरीत भीड़ व उचित मात्रा में आवास व्यवस्था न होने से गंदगी बढ़ती जाती है।

गांवों की कमियों की बात हम यहां पर नहीं करेंगे क्योंकि वे तो मनुष्यों की बनाई हुई है क्योंकि गांवों के विकास की कोई बात कभी सोची ही नहीं गई। आप सब लोग मुझसे ज्यादा ही जानते होंगे इस विषय में। हम तो यहां इस पर प्रकाश डालेंगे कि कैसे सदुपयोग करें उपर्युक्त अच्छाइयों का जो जन-साधारण के लिये लाभकारी हो और गांव एक स्वतंत्र इकाई की तरह पनप सके। लोगों को रोजगार की संभावनाएं प्रस्तुत करें और गांवों की ओर शहर के लोग आकर्षित भी हों तथा हम अपने गांवों पर गर्व कर सके।

गांवों से अब तक शहरों में कम दाम पर साग, सब्जी, फल, अनाज, दूध आदि जाता रहा है इसके तरीके में सुधार लाना होगा। पहले सड़कें नहीं थीं, टेलीफोन की सुविधा नहीं थी, टेलिविज़न नहीं था। यानि संचार के साधन नहीं के बराबर थे। अब ज्यादातर गांवों में ट्रेक्टर आ गये हैं बैलगाड़ियों का जमाना लद गया है ट्रकों की भी बहुतायत हो गयी है। सोचिये इनसे हमने क्या सीखा, कुछ नहीं? इन्हें हम सही उपयोग में लाए या नहीं, सभी के लाभ के लिये? पहले जब फसल पकती थी तो एक साथ रखकर बैलगाड़ियों पर (वह भी मागे की होती थी) शहर के आढ़तियों को दे दी जाती थीं। अब शायद सरकारी गोदामों के हवाले कर दी जाती है।

क्यों भई इनको गांवों में क्यों नहीं रखते गोदाम बना कर? जब जरूरत हो तब शहर में पहुंचा दो उचित दामों पर, सड़क नहीं भागी जा रही है, ट्रक भी आते-जाते रहते हैं और गोदाम शहर में मंहगे तथा गांव में सस्ते पड़ेंगे, अपने माल को कम दामों में जिस समय बाजार में उपज की अधिकता हो उसी वक्त बेचने की मजबूरी भी नहीं रहेगी। अपने जवानों को काम मिलेगा गांव के अंदर भी और शहर में उपज ले जाने और बेचने का भी। गेहूं की जगह आटा बेचा जाये। धान की जगह चावल बेचे जायें और बजाय ९०० किलो बोरे के १० किलो की छोटी-छोटी इकाईयों में सीधे खुदरा व्यापारियों को दें, बिचौलिये की क्या जरूरत है? इनको भरने के लिए थैलियां व

बोरे भी गांव में ही बनाएं। इस सब उद्योग के लिये बैंकों से सहायता मिल सकती है। गांवों में पहले से उपस्थित सेल्फ हैल्प ग्रुप से भी उधार लिया जा सकता है क्योंकि इस तरह का पूंजी निवेश गांवों के आर्थिक भंडार में बढ़ौती करने वाला है।

इस तरह अगर आप आपूर्ति चक्र का स्वयं एक बलिष्ठ हिस्सा बन जाएं तो बीच का लाभ आपके बच्चों को व पड़ौसियों को मिलेगा। एक साथ उन सारी वस्तुओं को जो आपने पैदा की हैं औने-पौने दामों पर खराब हो जाने के डर से क्यों बचते हैं? हर व्यक्ति को अपनी सम्पत्ति को बचाने की पूरी छूट है। कृषि-उपज को साफ करने, सुरक्षित रखने व संचित करने की प्रक्रिया वाले यंत्र आसानी से सब जगह उपलब्ध हैं जो गांवों में ही लगाए जा सकते हैं। इसके लिये किसी भी प्रकार के सरकारी संरक्षण की आवश्यकता व नियमों की अवहेलना नहीं होती है।

सरसों के बजाय सरसों का तेल निकाल कर बेचने में मुनाफा ज्यादा होगा। तेल के पीपे व डिब्बे शहर में ही क्यों बनें। स्कूल व कालेज गांव में हो सकते हैं, कापियां शहर में क्यों बने? जो फल धूप में सुखा कर बेचे जा सकते हैं जैसे अंगूर, आलू-बुखारा, अनन्नास, नाश्पाती सेव आदि उनकी अत्यधिक उपज चिंता के बजाय लाभ का कारण बन सकती है। अमरूद, आम संतरे की जैली जैम बनाकर बेचने में बहुत ज्यादा फायदा हो सकता है। अचार अब गांवों में बनने लगा है। इसी तरह हाथ का कागज बनाना, सूर्य की ऊर्जा से चलने वाली साइकिलें भी गांव में बने व गांवों के बीच किराये पर भी चलाई जा सकती है। इस तरह बहुत संभावनाएं हैं जिनको हमारे शिक्षा प्राप्त ग्रामीण युवक-युवतियां असलियत व लाभ में बदल सकते हैं। शिक्षा प्राप्त करके शहर में नौकरी ही क्यों ढूंढती है? इसके बाद जरूरत है तो बस बचत की या निवेश की पूंजी बैंकों से अथवा सैल्फ हैल्प ग्रुप से भी उधार लेकर इन लघु उद्योगों को ध्यान में रखकर स्कूल, कालेजों में शिक्षा के कार्यक्रम बनाये जा सकते हैं। जिससे पढ़ने के बाद भी बच्चों को नौकरी की तलाश में दर-दर न भटकना पड़े, बल्कि वो स्वयं व्यवसाय शुरू करके गांव के अन्य अशिक्षित लोगों को भी रोजगार दे सकें।

कम्प्यूटर सीख कर लोगों को इन्टरनेट या टेलीफोन की सुविधा भी आप दे सकते हैं, गांवों में जीवन कितना सुगम हो जाये अगर इन सब सुविधाओं की जानकारी व उपयोग गांववालों को सुलभ हो। फैक्स मशीन के द्वारा हाथ की हाथ चिट्ठियों का इधर से उधर पहुंचा देना सम्भव है, इससे सूचनाओं, फार्मो, आदि का आदान-प्रदान बहुत ही सरल व शीघ्र हो जाएगा। इन्टरनेट से बीमारियों का इलाज व रोकथाम भी हो सकती है।

सवाल यह उठाना चाहिये कि अगर गांवों की आबादी अधिक है तो हम कम आबादी वाले क्षेत्रों की जरूरतों को पूरा करने में क्यों लगे हुए हैं? हम उन चीजों की पैदावार में समय और शक्ति क्यों नही लगाते हैं जो ज्यादातर लोग इस्तेमाल करें? अब आपको एक बात पते की बताना चाहता हूं ताकि आप सब इसको अपने मस्तिष्क में उतार लें और यह भी आपको चौका देने वाली बात लगेगी कि यह सब आपके देश में हो रहा है पर टेलिविजन पर नहीं आएगा क्योंकि इन बातों से उनका कोई लाभ नहीं होने वाला है। साबुन, तेल, पाउडर, लिप्सिटिक, शेविंग क्रीम आदि के विज्ञापन खूब देखने को मिलेंगे जिसकी बिक्री से उनका फायदा है। यह एक छोटी सी बात है १०० रूपये माह एक परिवार के लोग साबुन इत्यादि में खर्च करते हैं पर हिन्दुस्तान लीवर उसका फायदा

उठाता है। आप खुद क्यों नहीं उठा सकते। बीड़ी पियेंगे सारे गांव के लोग पर फायदा जबलपुर में होगा मोहनलाल हरगोविन्द को। दवाई की जड़ी-बूटी गांव में होती है पर दवाई शहर में या विदेशों में बनेगी तब भी गांव में नहीं पहुंचेगी यह विडम्बना कब तक रहेगी? गांव वाले शहर में गांववासियों द्वारा बनाये गये कपड़े गांवों में पहनेंगे तो सोचिये शहर में मकान ज्यादा बनेंगे या गांव में। गांवों में रोजगार बढ़े इससे शहर वालों को यह फायदा होगा कि शहरों में नौकरी ढूंढने के लिये आने वालों की भीड़ नहीं बढ़ेगी। गांव तरक्की करेंगे तो आप गांवों के सुन्दर, प्राकृतिक, सुविधाओं से परिपूर्ण माहौल में छुट्टी बिताने जा सकते हैं।

घर के हकीम की राय कोई लेने वाला नहीं है आज भारत के योगशास्त्र से अमेरिका और सारा विश्व फायदा उठा रहा है। हमारे महात्मा, गुरू व स्वामी बाहर जाकर यह सब सिखा रहे हैं पर हमारे देशवासियों को हमारे गांवों में यह फायदा क्यों नहीं हो रहा है? निम्नलिखित धंधों में कई नई सम्भावनाएं हैं यह भारत के कुछ गांवों में लागू हो गयी है आप भी अपना सकते हैं। आलू सफेद के स्थान पर लाल पैदा कीजिये अधिक दाम मिलेंगे। ज्यादा आलू की फसल हो तो उसका पाउडर बना कर अमेरिका भेजो। एक कारखाना गुजरात में लग रहा है दूसरे प्रान्तों में या गांव-गांव में क्यों नहीं लग सकता? इसके कारण आलू उचित दामों में बिकेगा। दूध भी सीधे बेचिये गाय का और अधिक दाम कमाइये। सेंधा नमक व खाने का सोडा २ भाग / १ भाग मिलाकर मंजन कीजिये। दांतों को स्वस्थ रखिये और टूथपेस्ट पर खर्च होने वाला पैसा बचाइये। गांव के कूड़े से कम्पोस्ट खाद बनाइये जिससे गंदगी बीमारी कम और अधिक स्वास्थ्य का लाभ मिले। साबुन अपने आप बनाइये, क्रीम, पाउडर, लिप्सिटिक भी लघु गृह उद्योग में बनाये जा सकते हैं। हिन्दुस्तान लीवर के बजाय अपने गांव को अमीर बनने दीजिये। अपने पड़ौसियों के फूलते-फलने से आप भी लाभ में रहेंगे। ईंधन की गैस गोबर से बनाइये। बिजली भी खुद बनाइये गांव के कूड़े से तथा बैल चलित जेनरेटर की जानकारी के लिये लेखक से सम्पर्क करें। इस तरह सफाई के साथ-साथ आपके गांव में खाद व बिजली की आपूर्ति हो सकती है।

प्लास्टिक के खिलौने, गुब्बारे कागज के व कपड़े के नकली फूल गांव में बनाए जा सकते हैं। असली फूलों की पौध जो शहरों में खूब बिकती है गांवों में तैयार की जा सकती है। घरों को नई मंजिलों का बनाकर जमीन बचाएं और उस जमीन पर सब्जी पैदा करें, फल पैदा करें, पहले खुद खाएं बाद में ज्यादा होने पर शहरों को बेचें। आंध्र के गुंटूर जिले में एक आदमी ने सौ साल पहले एक आम का वृक्ष लगाया था जिसमें सन् २००३ में २८३४४ आम पैदा हुए। इससे उसके पौत्रों को करीब १.५ लाख की आमदनी हुई। अगर बच्चा पैदा होते ही उसके नाम से एक फल का या बहुमूल्य लकड़ी का पेड़ लगाने की परम्परा गांव में चल जाए तो परिवारों को हमेशा के लिये एक आमदनी का जरिया मिल जाए परिवार के एक सदस्य के साथ। पहले खुद अपने गांव का बाजार बनाएं बाद में दूसरों के बारे में सोचें आजकल अधिकतर गांवों में बाजार के नाम पर एक छोटा-सा खोका है जिसमें शहर से बीड़ी, गुटका, पान मसाला, तम्माखू, मीठी गोली आदि लाकर कोई बेचता है इससे गांव वालों को क्या लाभ है? A B C D सीखें Activity Based on Community Development यानि हमारी क्रिया व्यवहार और व्यापार का आधार-भूत उद्देश्य सामुदायिक और

व्यक्तिगत रूप से बिरादरी या लोक-समाज की ईकाई हमारे गांव की प्रगति, उद्धार और सरलीकरण जब होगा तब ही स्थायी सम्पन्नता और सुख को हम भोग पाएंगे और तभी अपना भारत देश आगे बढ़ेगा। नेताओं के चक्कर लगाने के बजाय अपना चक्कर चलाना यदि आ जाए तो काम बन जाये।

स्वार्थी न बनें पर अपना स्वार्थ देखें दूरदर्शी बनें। कोई भी काम बेगार में बिना पैसे लिये न करें या करायें यह मानव श्रम का अपमान है। अपनी पैदावार और अपनी मेहनत का उचित मूल्य मांगे। अपनी बचत को विकास कार्यो के निवेश करें पारिवारिक और सामुदायिक दोनों क्षेत्रों में तभी विकास सम्भव है। अपनी आय का एक हिस्सा सबसे पहले अपने विकास, बढ़ोत्तरी के लिये अलग रखें चाहे किसी का कितना भी उधार आपको देना हो। खबर है कि सरकार ने कानून बनाकर ग्रामीण क्षेत्रों को उधार से मुक्ति दिलवा दी है। आपको अपनी नींव मजबूत करनी है। जरा सोच कर देखें कि किसान के अलावा और कौन है जो धरती से अन्नादि पैदा करता है। बाकी सब तो वस्तुओं का रूप ही बदलते हैं और अन्नदाता से आगे बढ़ रहे हैं ऐसा क्यों? अगर सारा किसान वर्ग एकता के बूते पर सामुदायिक रूप से यह निश्चय कर लें कि अपने गांवों की प्रगति के लिये हम किसी के आश्रित नहीं रहेंगे तो कोई कारण नहीं कि यह न संभव हो क्योंकि भेजन जो किसान पैदा करते हैं वह मनुष्य की मूलभूत आवश्यकता है। आप लोग शहर में बनने वाली सैकड़ों वस्तुओं के बिना भी बिल्कुल आराम से रह सकते हैं परन्तु शहर में रहने वाले अन्न के दाने के बिना नहीं रह सकते। फिर आप गरीब और गांव शहरों के मोहताज क्यों हैं? इसको समझने के लिये आपको स्कूलों की पढ़ाई की जरूरत नहीं है। गांवों में एकता और सहयोग व आपसी प्रोत्साहन की जरूरत है। यदि हम सूक्ष्म निरीक्षण करें तो मालूम होगा कि पैसा कहां से जाकर कहां पर इकट्ठा हो रहा है। जितनी ज्यादा चीजें हम शहरों से खरीदेंगे उतनी ही हम शहरों में बिल्डिंगें बढ़ती देखेंगे पर फिर भी हमारे भाई-बच्चे लोग जो शहरों में मजदूरी करने गांवों को छोड़ कर जा रहे हैं। झोपड़-पट्टी में दिन भर की घोर मेहनत के बाद थककर सोने को मजबूर होते रहेंगे। उनके घर कभी नहीं बन पाएंगे क्योंकि शहरी लोग मेहनत की कद्र करना नहीं जानते हैं और लोगों की लाचारी का फायदा उठाते हैं। इसीलिये हम आपसे कहते हैं कि आप लाचार मत बनिये। १+१=२ नहीं ११ होते हैं। जब अधिक लोगों का एक ध्येय हो तो गलत प्रभाव या चलन को रोकना आसान होता है। जैसे कि हम पानी के प्रवाह को अपने भले के लिये रोकते हैं। रोक का प्रवाह से अधिक मजबूत होना बहुत जरूरी होता है। हमारे इर्द-गिर्द क्या हो रहा है इसकी जानकारी ज्यादा जरूरी है बजाय स्कूली शिक्षा के।

जितनी ज्यादा हम चाय पियेंगे उतनी ज्यादा लिपटन आदि कम्पनी को बढ़ाकर उनकी कोलकाता में इमारतें बनाने में हम सहयोग देते जाएंगे। चीनी का प्रयोग अधिक क्यों करें जबकि बूरा, गुड़ स्वास्थ्य की दृष्टि से अच्छा है और गांवों में बन सकता है। गन्ने का रस राव शीरा सभी अच्छे हैं चीनी के केमिकल्स हमारे शरीर में नहीं जाएंगे। राव बनाएंगे तो गांव में घड़े बनेंगे और कुम्हारों को काम मिलेगा। सरकारी खादों के कारखाने बन्द हो रहे हैं क्योंकि वह जमीन को विषैला बना देती है। औरगेनिक (घरेलू खाद) में पैदा हुई सब्जी, अनाज सभी मंहगे बिकते हैं। बंगाल में अब धान कम व अनन्नास ज्यादा पैदा होते हैं क्योंकि उनकी मांग बढ़ रही है और मंहगे भी हैं।

लाभ का एक और पहलू है कि अपनी उपज को एक साथ बेचने से एक मुश्त पैसा मिलता है पर वह उतनी ही जल्दी खर्च भी हो जाता है। इस तरह से बाकी समय में साल में पैसा हाथ में नहीं रहता जबकि व्यापार का पहला नियम है कि पैसा जितनी बार हाथ में आए एक नियत समय में उतना ही योजनापूर्ण ढंग से उसका निवेश हो सकता है। अर्थशास्त्री मत बनिये पर अपने लाभ के लिये उसके नियमों को समझने में कोई हानि नहीं है।

गुजरात में गांव के लोग अब हीरों की घिसाई करने में लगे हैं। तभी तो भारत में दुनिया के ८० प्रतिशत हीरों की घिसाई होती है। हम ऐसे और बहुत से काम इस तरह की घिसाई मशीनों से गांव में कर सकते हैं जिनसे अतिरिक्त आमदनी हो सके। राजस्थान में इतने अधिक बढ़िया चिकने पत्थर यों ही पड़े रहते हैं। उन्हें घिसकर पेपर-वेट, छोटे-छोटे जानवर आदि का रूप देकर बेचे जा सकते हैं। पापड़, बड़ियां, अचार आदि के बारे में सबको पता ही है पर ये शहरों में ही ज्यादा बनता है गांवों में क्यों नहीं बन सकता। इसी तरह ब्रेड और बिस्कुटें की बेकरी शहरों में ही है। गांवों में इन्हें खोलने में कोई अड़चन नहीं है, लोगों को व्यवसाय ही मिलेगा। आलू गांवों में पैदा होता है पर चिप्स शहरों में ही क्यों बनते हैं? नाश्ते में खाने वाले सामान भी शहरों में ही क्यों बनते हैं? इन सम्भावनाओं पर विचार करें। अमरीका में ये सब काम गांवों में या कस्बों भी वहीं के निवासियों द्वारा होता है।

जो भी हानिकारक प्रक्रियाएं आजकल चल रही हैं वैसे ही चलती रही तो गांवों का और पूरे देश का भविष्य खतरे में है। घन्टियां बज रही हैं, सुनकर चेत जाइये, अच्छा रहेगा।

एक साल में औसतन एक ३०० परिवारों का गांव निम्नलिखित मदों में पैसा शहर में भेज रहा है उसे रोकिये ताकि गांव का भविष्य सुधर जाए।

सिगरेट, बीड़ी में - ५ लाख। चाय-कॉफी में - ५ लाख। बीमारी दवाई में - १० लाख। पढ़ाई पर - २० लाख। मुकदमों में - १५ लाख। जेवरात - १० लाख। औजार - १० लाख। इसी तरह और भी खर्चे जो आप शहर में करते हैं आपको ज्ञात होगा जैसे कि साबुन, तेल, शेविंग क्रीम, टूथपेस्ट आदि तथा सौंदर्य प्रसाधन की चीजों में एक दो लाख के बीच लगता होगा। अगर गांवों में आमदनी व खर्चे का लेखा-जोखा रखा जाये तो आप स्वयं इस व्यय खर्चे पर नियंत्रण और आवश्यक वस्तुओं की स्थानापन्न चीजों की खोज दोनों सफलतापूर्वक कर सकेंगे।

आप इन सब मांगों को कम खर्चे में बल्कि अधिक गुणवत्ता से पूरा कर सकते हैं और इससे आपके बच्चों व पड़ौसियों का भी फायदा होगा। एक लाख रूपये में एक परिवार इस तरह का कोई व्यवसाय शुरू कर सकता है पर इसमें साहस, दूरदर्शिता, सहयोग और योजनात्मक तरीके से काम करने का निश्चय जरूर होना चाहिये। अब जबकि कारों का चलन बढ़ गया है तो क्यों न हम उन गांवों में जो सड़कों के किनारे बसे हैं मोटल खोलकर यात्रियों के ठहरने की व्यवस्था कर धन कमायें। विदेशी व्यवसायी इस काम पर आंख गड़ाए हैं। आप सोचेंगे पूंजी कहां से आएगी। पर ऐसे काम सामूहिक पूंजी इकट्ठी करके चार पांच या ६ परिवार शुरू कर सकते हैं और इन्हीं परिवारों के सदस्य इसमें काम करें और लाभ को आपस में बांटे।

गांव में निजी लाइब्रेरी व बुक बैंक बनाइये जिससे गांव के बच्चों का ज्ञान बढ़े। इसके लिये

हर परिवार से चन्दा या वार्षिक अथवा मासिक शुल्क जो न्यूनतम हो लिया जाये। अक्षर ज्ञान व गणित को प्रारम्भिक शिक्षा से पहले बच्चों को अपने गांव के भूगोल, जलवायु, प्राकृतिक सम्पदा आदि की जानकारी बहुत जरूरी है और प्रारम्भिक शिक्षा के बाद उन्हें पैतृक या पारिवारिक व्यवसाय की जानकारी के अतिरिक्त अपनी रूचि के क्षेत्र में स्वतंत्र अध्ययन करने की सुविधा होनी चाहिये। ये सुविधा सामूहिक रूप से गांव के सब बच्चों के लिये जुटाना गांव की प्रबंध समिति, पंचायत तथा उस स्थान पर काम कर रहे NGO's का कर्तव्य है। गांव के नागरिकों को भी इसके लिये मांग करनी चाहिये। ये बच्चे ही भारत के भविष्य की पूंजी है। भगवान ने सभी को प्रतिभा दी है।

पढ़े-लिखे नवयुवकों को नौकरी के लिये दर-दर भटकने की आवश्यकता नहीं है। रोजगार योजना के अंतर्गत घरेलू उद्योगों को खेलने के लिये मिल सकता है उधार। व्यापार का मुख्य पहलू यह होता है कि ग्राहक को उचित समय पर उचित मूल्य में सेवायें या वस्तु मिल जाये। अतः ऐसे धन्धे में लगना चाहिये जो आपको आय का एक विकल्प दे सकें क्योंकि खेती से आय हर समय व हर बार एक-सी नहीं होती है इसलिये द्वितीय आय का साधन कृषक परिवारों के लिये बहुत जरूरी है। अपने बच्चों को कम उम्र से ही उत्साहित कीजिये कि वे खेती के अलावा भी कोई हुनर या कला सीखें ताकि वह समय पड़ने पर आपके लिये आय का साधन बन सके।

दाल बनाने का संयंत्र खरीदें। दाल को छोटे पैकेटों में भरकर इसी तरह मसालों को छोटे पैकेटों में भरकर बेच सकते हैं। पैकेट बनाने की मशीन बहुत सस्ती होती है। अगर आपका माल साफ और अच्छी किस्म का होगा तो आपको उद्योग में लाभ होते देर नहीं लगेगी। सूखे फलों और मेवाओं को भी पैकेट में भरकर बेचना अच्छा काम है।

और हां यह बात तो आपको मालूम ही होनी चाहिये कि सोना-चांदी पहले जमाने में एक बचत का साधन था जब बैंकों इत्यादि की सुविधा नहीं थी और सोना-चांदी को आदमी औरतें अपने तन पर रखते थे। यह बचत भी थी और मुश्किल के समय पैसा मिल जाने का साधन भी। पर आज सोचकर देखें कि क्या सोना-चांदी अण्डे देता है? उनकी कीमतें भी अब बराबर एक-सी रहती हैं। खरीदने व बेचने में कम से कम २५ प्रतिशत से लेकर ५० प्रतिशत तक नुकसान होता है सो अलग। फिर ये बेचकर कुछ पैसा तो दे सकता है परन्तु आय का साधन नहीं बन सकता तो सोने-चांदी के जेवरों पर शादी ब्याज में क्यों व्यर्थ पैसा बहाना है?

अब कोई समाजों ने यह निर्णय लिया है कि सोना-चांदी नहीं खरीदेंगें क्योंकि यह बचत का अच्छा माध्यम नहीं है। आशा है आप भी अपनी मेहनत की कमाई को व्यर्थ में रोककर घाटे का सौदा नहीं करेंगे। पैसा बचत का व आय का साधन बने न कि घाटे का सौदा। बैंकों में पड़े रहने से भी उसका लाभ इतना नहीं है जितना कि उसे कमाई का साधन बनाए तो आपका व आपके परिवार का भविष्य उज्जवल होगा। वरना जैसा आप अब तक कर रहे हैं वैसा ही करते रहे तो जैसा फल मिल रहा है वही मिलता रहेगा कुछ बदलने वाला नहीं है।

आकाश, जल, पृथ्वी, वायु और अग्नि ये पंचमहाभूत जो शरीर के लिये जरूरी है इनसे ही शरीर बना है। गांवों में शहरों की अपेक्षा अधिक यात्रा में उपलब्ध है। गांवों में यदि वायु की गति न दिशा को माप कर नियंत्रित किया जाये तो बिजली व पनचक्की बनायी जा सकती है। सूर्य ऊर्जा

भी बिजली को बनाने व खारे पानी को साफ करने में प्रयोग की जा सकती है। जो लोग समुद्र के किनारे बसे हैं लहरों से बिजली बनाने के बारे में विचार करें। अतिरिक्त बिजली केन्द्रीय सरकारों या बिजली संस्थानों को बेच कर आय का साधन बन सकती है। गांव को इन सब बातों के लिये सरकारी मंजूरी की कोई आवश्यकता नहीं है यदि गांव वाले यह काम करें (१८५४ के एक संवैधानिक नियम के आधीन)।

आशा है इस लेख से आपको कुछ प्रेरणा तथा अपने भविष्य को सुधारने के लिये कुछ नये विचार मिले होंगे।

रश्मि उमेश रोहतगी
२४१६१, नीलन ड्राइव, नोवी, मिशिगन
(सं.रा.अ.) ४८३७५ (२४८) ४७१-५७८६
E-mail : rurohatgi@yahoo.com www.rurohatgi.com